

गणेश चालोसा

दोहा

जय गणपति सद्गुण सदन, करिवर बदन कृपाल।
विघ्न हरण मंगल करण, जय जय गिरिजालाल॥

चौपाई 1

जय जय जय गणपति गणराजू।
मंगल भरण करण शुभ काजू॥

चौपाई 2

जय गजबदन सदन सुखदाता।
विश्व विनायक बुद्धि विधाता॥

चौपाई 3

वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन।
तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन॥

चौपाई 4

राजित मणि मुक्त्तन उर माला।
स्वर्ण मुकुट सिर नयन विशाला॥

चौपाई 5

पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं।
मोदक भोग सुगन्धित फूलं॥

चौपाई 6

सुन्दर पीताम्बर तन साजित।
चरण पादुका मुनि मन राजित॥

चौपाई 7

धनि शिव सुवन षडानन भ्राता।
गौरी ललन विश्व-विख्याता॥

चौपाई 8

ऋद्धि-सिद्धि तव चँवर सुधारे।
मूषक वाहन सोहत द्वारे॥

चौपाई 9

कहाँ जन्म शुभ कथा तुम्हारी।
अति शुचि पावन मंगलकारी॥

चौपाई 10

एक समय गिरिराज कुमारी।
पुत्र हेतु तप कीन्हा भारी॥

चौपाई 11

भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा।
तब पहुँच्यो तुम धरि द्विज रूपा॥

चौपाई 12

अतिथि जानि के गौरी सुखारी।
बहु विधि सेवा करी तुम्हारी॥

चौपाई 13

अति प्रसन्न है तुम वर दीन्हा।
मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा॥

चौपाई 14

मिलहि पुत्र तुहि, बुद्धि विशाला।
बिना गर्भ धारण यहि काला॥

चौपाई 15

गणनायक गुण ज्ञान निधाना।
पूजित प्रथम रूप भगवाना॥

चौपाई 16

अस कहि अन्तर्धान रूप है।
पलना पर बालक स्वरूप है॥

चौपाई 17

बनि शिशु रुदन जबहिं तुम ठाना।
लखि मुख सुख नहिं गौरी समाना॥

चौपाई 18

सकल मगन सुख मंगल गावहिं।
नभ ते सुरन सुमन वर्षावहिं॥

चौपाई 19

शम्भु उमा बहु दान लुटावहिं।
सुर मुनिजन सुत देखन आवहिं॥

चौपाई 20

लखि अति आनन्द मंगल साजा।
देखन भी आये शनि राजा॥

चौपाई 21

निज अवगुण गुनि शनि मन माहीं।
बालक देखन चाहत नाहीं॥

चौपाई 22

गिरिजा कछु मन भेद बढ़ायो।
उत्सव मोर न शनि तुहि भायो॥

चौपाई 23

कहन लगे शनि मन सकुचाई।
का करिहौ शिशु मोहि दिखाई॥

चौपाई 24

नहिं विश्वास उमा उर भयऊ।
शनि सों बालक देखन कह्यऊ॥

चौपाई 25

पड़तहिं शनि दृग कोण प्रकाशा।
बालक सिर उड़ि गयो अकाशा॥

चौपाई 26

गिरिजा गिरी विकल है धरणी।
सो दुख दशा गयो नहिं वरणी॥

चौपाई 27

हाहाकार मच्यो कैलाशा।
शनि कीन्हो लखि सुत का नाशा॥

चौपाई 28

तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधाये।
काटि चक्र सो गज सिर लाये॥

चौपाई 29

बालक के धड़ ऊपर धार्यो।
प्राण मन्त्र पढ़ शंकर डार्यो॥

चौपाई 30

नाम गणेश शम्भु तब कीन्हे।
प्रथम पूज्य बुद्धि निधि वर दीन्हे॥

चौपाई 31

बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा।
पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हा॥

चौपाई 32

चले षडानन भरमि भुलाई।
रचे बैठ तुम बुद्धि उपाई॥

चौपाई 33

चरण मातु-पितु के धर लीन्हें।
तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें॥

चौपाई 34

धनि गणेश कहि शिव हिय हर्ष्यो।
नभ ते सुरन सुमन बहु वर्ष्यो॥

चौपाई 35

तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई।
शेष सहस मुख सके न गाई॥

चौपाई 36

मैं मतिहीन मलीन दुखारी।
करहुँ कौन विधि विनय तुम्हारी॥

चौपाई 37

भजत रामसुन्दर प्रभुदासा।
लग प्रयाग ककरा दुर्वासा॥

चौपाई 38

अब प्रभु दया दीन पर कीजै।
अपनी भक्ति शक्ति कुछ दीजै॥

समापन दोहा 1

श्री गणेश यह चालीसा, पाठ करै धर ध्यान।
नित नव मंगल गृह बसै, लहै जगत सन्मान॥

समापन दोहा 2

सम्बत् अपन सहस्र दश, ऋषि पंचमी दिनेश।
पूरण चालीसा भयो, मंगल मूर्ति गणेश॥